चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र

Chandamama, August, '49

Photo by N. Ramakrishna

मीठा बोझ ढोना मुश्किल नहीं जान पड़ता। क्यों?

चन्दामामा
विषय सूची

इसके अलावा, मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर रंगीले चित्र, और भी अनेक प्रकार की विशेषताएँ हैं।

चन्दामामा कार्यालय
पोस्ट बाक्स नं० १६८६
मद्रास-१

स्वतन्त्रता-दिवस पर हमारे हार्दिक अभिनन्दन !

दि मैसूर प्रीमियर मेटल फेक्टरी

पीतल, अल्यूमीनियम, और बेधब्बेदार इस्पात

के बर्तन बनाने वाले।

और किसी भी आकार के अल्यूमीनियम वृत्त

तैयार मिलते हैं।

कोई भी बर्तन खरीदने के पहले

इस चिह्न के लिए देखिए !

सूरज मार्का के माने हैं शुद्धता और श्रेष्ठता।

आफिस फोन नं० २५३५ टेलिग्राम - 'सनशेड' फेक्टरी फोन नं० १८२९

केशवलाल के० शाह

(मेनेजिंग पार्टनर)

आफिस
१२८ मिंट स्ट्रीट, मद्रास

वर्क्स
तोंडियारपेट

सेठ गोविंद दास
सभापति
हिन्दी साहित्य सम्मेलन

बालकों के साहित्य का हिन्दी में बड़ा भारी अभाव है। नये निर्माण में बालकों का निर्माण प्रधान है और इसमें बालकों का साहित्य बहुत सहायक हो सकता है। मुझे यह जान कर हर्ष हुआ कि 'चन्दामामा' नामक मासिक का प्रकाशन जून में होने जा रहा है। यह बालकों को उचित मार्ग की ओर प्रेरित करे, यही मैं इससे चाहता हूँ।

मद्रास
२९.४.४९

— गोविन्ददास

★

There is a great need for children's literature in Hindi. For the new shape in making, the training of the children is an important factor and for this purpose children's literature will be of much help. I am delighted to know that a monthly magazine—'CHANDAMAMA' is going to be published in June. I wish that this magazine will strive to lead child ren to the right path.

Madras,
29-4-49

(Sd.) SETH GOVIND DOSS
President
HINDI SAHITYA SAMMELAN

वर्ष १ अङ्क १ | संचालक: चक्रपाणी | १५ आगस्त १९४९

स्वतन्त्रता के दूसरे वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में स्वतन्त्र-भारत के बालकों को हम 'चन्दा-मामा' का उपहार देते हैं। बच्चे अनादि काल से अपने प्यारे चन्दा-मामा को बुलाते आए हैं। कन्हाई ने भी कहा था—'मैया! हौं चन्द खिलौना लैहौं।" लेकिन चन्दा-मामा को और भी तो काम रहता है न? उसे रात में उजियाला करना पड़ता है न? इसलिए वह आसमान से, धरती पर न उतर सका। लेकिन आजकल तो विज्ञान का युग है। बिजली की बत्तियाँ शहरों और गाँवों के कोने कोने में रात रात भर जल कर रोशनी करती रहती हैं। इसलिए चन्दा-मामा को फ़ुरसत मिल गई है। बस, वह दौड़ा दौड़ा आसमान से उतर कर, सीधे अपने प्यारे बच्चों का मन बहलाने के लिए आया है। 'चन्दा-मामा' को बच्चों के हाथ में रखते हुए हमें बड़ी खुशी हो रही है। आशा है, स्वतन्त्र-भारत के घर २ में इसकी रूपहरी किरणें नाच उठेंगी।

किसी गाँव में रहती बच्चो! एक अकेली बुढ़िया;
उसके यहाँ एक मुर्गा था और अंगीठी बढ़ियाँ।

सुन मुर्गे की बाँग रोज वह तड़के ही उठ जाती;
डाल कोयला अंगीठी में झटपट आग जलाती।

मुर्गे की कु-कु-ड़ूँ-कूँ सुनकर पड़ोसिनें भी आतीं,
इधर उधर की बातें करके आग माँग ले जातीं।

इसी तरह कुछ दिन जब बीते, बुढ़िया ने यह समझा—
'मेरा मुर्गा ही दुनियाँ को रोज़ जगाया करता।

और अंगीठी मेरी जलकर चूल्हे सभी जलाती।
यह सब तो करती हूँ मैं, पर बदले में क्या पाती?'

मुर्गा और अंगीठी लेकर बुढ़िया चली वहाँ से;
दूर पहाड़ी के नीचे जा रहने लगी खुशी से।

कुछ दिन बीते; उसी गाँव का धोबी चला उधर से,
उसे देख बुढ़िया ने पूछा—'आता है क्या घर से?

कह तो क्या दुनिया अब भी हर रोज़ सबेरे जगती?
क्या अब भी सबके घर पहले सी ही आग सुलगती?'

सुन बुढ़िया की बातें धोबी खड़ा रहा मुँह बाये;
ये भोले सवाल उसकी कुछ भी न समझ में आये।

बुढ़िया ने फिर फिर पूछा तो बोला डरते डरते—
'हाँ; सब तड़के जगकर चूल्हे रोज़ जलाया करते।'

'मुर्गे और अंगीठी से अब मैं ने धोखा खाया!'
कह बुढ़िया ने फोड़ अंगीठी, मुर्गे को मरवाया!

'मैं ही यह संसार चलाता' कुछ यों सोचा करते
और गर्व से फूल अंत में बुढ़िया सा कुढ़ मरते।

चन्दामामा

चन्दामामा ! चन्दामामा !
आसमान में चन्दामामा !
धरती पर भी चन्दामामा !
गाँव गाँव में 'शहर शहर में'
गली गली में औ घर घर में
चन्दामामा खेल रहा है !
चन्दामामा बोल रहा है !
एक पाख तक छिप रहता है
आसमान का चन्दामामा ।
किंतु चमकता रहता सब दिन
धरती पर का चन्दामामा ।

दिन में कहीं दुबक रहता है
आसमान का चन्दामामा !
निस दिन जगमग करता रहता
धरती पर का चन्दामामा !
चन्दामामा ! चन्दामामा !
जल्दी आना, जल्दी आना !
रङ्ग बिरङ्गी छवि दिखलाना !
मीठे गाने और कहानी
सुना सुनाकर मन बहलाना–
चन्दामामा ! चन्दामामा !
बच्चों के प्रिय चन्दामामा !

बच्चो ! तुम ने समुंदर तो देखा ही होगा। देखने में वह कैसा नीला और कैसा सुंदर होता है ! उसकी गहराई की थाह पाना बहुत कठिन है। कहते हैं, समुंदर में भी बड़े-बड़े पहाड़, छोटे मोटे टीले, और बहुत ही सुंदर गुफ़ाएँ हैं। समुंदर में रहने वाले गुफ़ाओं में रहते हैं। लेकिन वे गुफ़ाएँ हमारे घरों और महलों से कहीं ज्यादा खूबसूरत होती हैं। उन गुफ़ाओं की दीवारें मूँगों की और छतें मोतियों की होती हैं। हीरे-ज्वाहरातों से जड़ी हुई वे गुफ़ाएँ दिन-रात जगमगाती रहती हैं। उनमें और कोई रोशनी करने की ज़रूरत नहीं होती। उन गुफ़ाओं में सिंधुराज की पुत्रियाँ, नाग-कन्याएँ रहती हैं। उन नाग-कन्याओं के भौंरों से काले-काले बाल होते हैं। उनके मुँह की चमक से उन गुफ़ाओं की रौनक़ और भी बढ़ जाती है। वे सोने के तारों से बुने हुए झीने कपड़े पहनती हैं और उन के घुँघराले बाल सागर की तरंगों के साथ साथ लहराते रहते हैं। जब उन गुफ़ाओं में रहते-रहते उन नाग-कन्याओं का मन उचट जाता है तब वे सैर करने निकल पड़ती हैं। उतने बड़े राजा की लड़कियाँ, वे पैदल कैसे चलें ? नहीं, उनके लिए सीपियों से बने हुए सुन्दर रथ तैयार रहते हैं। उन रथों में सुनहरी मछलियाँ जोती जाती हैं। वे नाग-कन्याएँ उन रथों पर चढ़कर अक्सर आधी-रात के वक्त समुन्दर के तट पर आती हैं। वहाँ के मुलायम बालू पर बैठकर वे तरह-तरह के खेल खेला करती हैं और हमेशा सूरज उगने के पहले ही चली जाती हैं। हमेशा रातों-रात खेलने के कारण उन्होंने कभी सूरज का उगना न देखा। उन्हें यह भी नहीं मालूम कि सूरज होता कैसा है !

गोपालकृष्ण
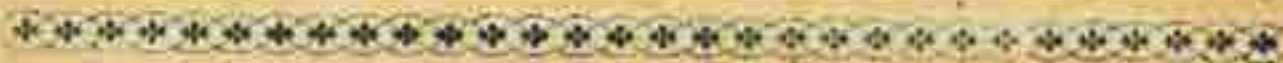
अच्छा, तो एक बार कुछ नाग-कन्याएँ इसी तरह समुन्दर के तट पर खेलने आईं। वे सारी रात खेलती रहीं और सूरज के उगने के पहले ही चली गईं। लेकिन उनमें से एक बहुत ही सुंदर नाग-कन्या भूल से पीछे छूट गई। वह खेलने के लिए सबसे अलग, अकेली, बहुत दूर चली गई थी। जब तक वह लौट आई उसकी सब सहेलियाँ अपनी अपनी गाड़ियों में बैठकर चल चुकी थीं। अब वह बेचारी क्या करती! वह बिलकुल अकेली एक चट्टान के ऊपर बैठी रही। थोड़ी देर में उसे पूरब से एक अजीब रोशनी निकलती दिखाई दी। वह एक-टक उसकी ओर देखने लगी। क्योंकि उसने पहले कभी सूरज को निकलते नहीं देखा था। आज उसे यह देखकर बड़ा आनन्द हुआ। उसने सोचा—"अरे! यह क्या है! ऐसा सुन्दर दृश्य तो मैंने पहले कभी नहीं देखा था!"

इतने में सूरज पूरा निकल आया और उसे आकाश में एक सुन्दर राजकुमार सात घोड़ों वाले रथ पर बैठा, घोड़ों को हाँकता हुआ दिखाई दिया। ऐसा अच्छा रथ और ऐसे सुन्दर घोड़े उसके पिता के पास भी

न थे। ऐसा सुंदर राजकुमार तो उसने कभी देखा ही न था। उसने सोचा—"अगर वह सुन्दर राजकुमार मुझे अपने साथ रथ में बैठा ले चले तो कितना अच्छा हो!" इस तरह वह दिन भर वहाँ बैठी बैठी सूरज की ओर देखती रही। सूरज के साथ-साथ उसकी नज़र भी दौड़ती रही।

धीरे धीरे सूरज पहाड़ों में छिप गया। रात हो आई। थोड़ी देर में उसकी हम-जोलियाँ भी समुन्दर के किनारे पर खेलने आ गईं। उसने दिन भर जो जो देखा सुना था सब सखियों से कह सुनाया। इन्हीं बातों में फिर रात बीत चली। उसकी सब सखियाँ घर लौटने लगीं। लेकिन वह अपनी जगह से न हिली, न डुली। सखियों ने बुलाया तो उसने कहा—"मैं नहीं आऊँगी। मैं यहीं बैठकर उन महाराज की राह देखूँगी।" सखियों ने उसे समझाया—"वे महाराज आएँगे नहीं, तेरा हठ बेकार है।" लेकिन वह टस से मस न हुई।

सूरज महाराज अपने रथ पर फिर आ गए। वह नाहक आस लगाए बैठी रही कि वे उसे बुलाकर रथ में बिठा लेंगे और अपने साथ ले आएँगे। पर महाराज ने उसकी

ओर आँख उठा कर देखा तक नहीं। इसी तरह कई दिन बीत गए और वह ज्यों की त्यों बैठी रही। सूरज महाराज ने उसकी ओर ध्यान न दिया। उसने सोचा, ज़रूर इसका कोई न कोई कारण होगा। शायद वह जहाँ बैठी है वहाँ से उनको अच्छी तरह दिखाई न देती होगी। यह सोचकर उसने वहाँ से उठने की कोशिश की। लेकिन अब उसे मालूम हुआ कि वह वहाँ से हिल-डुल भी नहीं सकती। उसके दोनों पैर धरती में धँस कर जड़ फैला चुके थे। धीरे-धीरे उसकी देह भी सूख कर एक पौधे सी हो गई और उसमें पत्ते भी निकल आए। उसके काले काले केश बदल कर सुनहरा पराग बन गए और उसका मुँह धीरे धीरे एक सुंदर फूल हो गया।

पर यह फूल मामूली फूल नहीं है। बड़ा ही निराला फूल है। जब सूरज सवेरे सवेरे अपने सात घोड़ों वाले सोने के रथ पर बैठकर पूरब से निकलता है तब यह फूल उसकी ओर मुँह करके दीन-स्वर में गिड़गिड़ाकर कहता है—"महाराज! क्या अब भी आपको मुझ पर दया नहीं आएगी? क्या अब भी आप इस दासी को अपने साथ न ले जाएँगे?" दोपहर को जब सूरज ठीक हमारे सिर पर आ जाता है, तब यह फूल भी ठीक उसी की ओर मुँह करके खड़ा हो जाता है। शाम को वह सूरज के साथ साथ पश्चिम की ओर मुड़ने लगता है।

बच्चो! अब तुम समझ गए न कि यह कौन-सा फूल है? इसी को सूरजमुखी या सूर्यमुखी कहते हैं। बड़े-बूढ़ों का कहना है कि यह नाग-कन्या आज तक इस फूल के रूप में सूरज के लिए तप कर रही है!

इसी से उस फूल को सूरजमुखी कहते हैं।

दो हजार बरस पहले पाटलीपुत्र में वर्धमान नाम का एक आदमी रहता था। उसका बाप बड़ा अमीर था। उसके पास बहुत से जहाज़ थे। देश-विदेश से उसका व्यापार चलता था। उसके आदमी जहाज़ों पर चढ़ कर दूर दूर तक जाते थे। बहुत से विदेशी व्यापारी भी दुनियाँ के हर कोने से उस के यहाँ आया करते थे। वे अपने देशों की अजीब अजीब कहानियाँ भी सुनाया करते थे। बचपन से ही उनके मुँह से ये सब कहानियाँ सुनते सुनते वर्धमान के मन में भी देस-देशान्तर घूमने की इच्छा पैदा हुई।

कुछ दिन के बाद वर्धमान का बाप चल बसा। सारा व्यापार वर्धमान की मुट्ठी में आया। अब उस ने एक बहुत बड़ा जहाज़ बनवाया और उस पर चढ़ कर देश-विदेश घूमने की ठनी। उसने पहले ब्राह्मणों से पूजा करवाई। गरीबों और भिखमंगों को खाना कपड़ा बाँटा। व्यापार के लिए सब तरह का सामान ख़रीद कर जहाज़ पर लदा। तीन महीनों भर के लिए खाने-पीने की चीज़ें भी जहाज़ पर रख लीं। फिर एक शुभ साइत में जहाज़ ने लँगर उठाया और पूरबी टापुओं की तरफ़ चल पड़ा।

एक हफ़्ते तक उन की यात्रा में कोई विघ्न न आया। किंतु आठवें दिन समुद्र में एक बड़ा तूफ़ान उठा। यह तूफ़ान बराबर बढ़ता गया। अंत में उसने बड़ा विकराल रूप धारण किया। प्रचण्ड आंधी में जहाज़ एक सूखे पत्ते की तरह जिधर-तिधर डोलता रहा। तीन दिन तक जहाज़वालों को यह भी नहीं मालूम हुआ कि वे किस ओर बहे जा रहे हैं। इस

'गलिवर्स ट्रावल्स' का स्वेच्छानुवाद

तरह भटकते हुए जहाज़ बीच समुंदर में एक चट्टान से जा टकराया और चूर-चूर हो गया। जहाज़ में जितने लोग थे सब-के-सब डूब गए। सारे हीरे-जवाहरात, कपड़े-लत्ते और साज-सामान समुंदर के पेट में समा गए।

अकेला वर्धमान बचा रहा। उसे जहाज़ के एक टूटे मस्तूल का सहारा मिल गया था। वह जल्दी-जल्दी तैरने लगा। लेकिन कुछ ही देर में ऐसा थक गया कि सुध-बुध जाती रही। इस तरह न जाने वह कब तक बेहोश पड़ा रहा। जब होश में आया तो तूफ़ान का कहीं नामो-निशान न था। आसमान साफ़ था। सूरज चमक रहा था। समुद्र भी शांत था। उसने मस्तूल का सहारा छोड़ दिया और धीरे धीरे तैरते हुए किनारे की तरफ बढ़ा। एकाएक उसके पैर ज़मीन से जा लगे और उसकी जान में जान आई। वह झपट कर किनारे पर पहुँच गया।

समुंदर का वह किनारा बिल्कुल सुनसान था। कहीं भी आदमी या जानवर का पता न था। अब उसे विश्वास हो गया कि उसकी जान बच गई। उसने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया। उस मैदान में मुलायम हरी घास उग रही थी। वह उस पर लेट गया।

जब दूसरे दिन उस की नींद खुली तो पूरब में पौ फट रही थी। उसे धीरे धीरे कल की सभी बातें याद आ गईं। वह ज़मीन पर से उठने की कोशिश करने लगा। लेकिन उठ न सका। उस के हाथ-पैर ज़मीन से चिपक गए थे। वह सिर भी नहीं हिला सकता था। हजारों सूत के धागों से किसी ने उसे ज़मीन से जकड़ दिया था।

वर्धमान अचंभे में पड कर सोचने लगा कि यह क्या हुआ? इतने में उसे ऐसा मालूम हुआ मानों कोई जीव उसके पैरों पर रेंग रहा है। वह जीव धीरे धीरे उसकी छाती पर आ गया। वर्धमान ने मुश्किल से सर उठा कर देखा तो मालूम हुआ कि वह एक नाटा-सा आदमी है। वह आदमी सिर्फ छः अंगुल लंबा था। उसके हाथ में एक धनुष था और पीठ पर एक तरकस।

उस जीव ने जान लिया कि वर्धमान जगा हुआ है। उसने महीन आवाज़ में कुछ कहा। तुरंत कोई पचास बौने भुनगों की तरह उस पर रेंगने लगे। ये भी पहले आदमी की ही तरह छोटे और बौने थे।

वर्धमान ने उन से पूछा—"आप लोग कौन हैं? मुझे क्यों इस तरह बांध रखा है?" शायद वर्धमान की आवाज उन्हें बादलों की गड़-गड़ाहट ही जान पड़ी होगी। क्यों कि वे सब लोग डरकर भागने लगे। जल्दीबाजी में कुछ लोग फिसल कर गिर भी पड़े और उनके हाथ पैर टूट गए।

वर्धमान ने जान लिया कि उनसे पूछने से कोई फायदा न होगा। उसने हाथ को एक झटका दिया। बस, सब धागे तड़तड़ाकर टूट गए। इसी तरह उसने पैरों के बंधन भी तोड़ लिए। यह देखते ही वे नये लोग समझ गए कि उनका कैदी बचकर भाग जाना चाहता है। बस, अब क्या था? उन्होंने दूर से ही उस पर छोटे-छोटे तीरों की वर्षा कर दी। वे छोटे छोटे सुइयों के से तीर वर्धमान के कपड़ों पर लग कर चुभ गए और बदन तक नहीं पहुँच सके। लेकिन जो तीर मुँह पर जाकर लगे उनके चुभने से चींटियों के काटने की सी पीड़ा होने लगी।

अब वर्धमान को यह जानने की इच्छा हुई कि ये लोग क्या करना चाहते हैं? वह बिना हिले डुले चुपचाप पड़ा रहा।

कुछ देर के बाद वे बौने डरते-डरते वर्धमान के पास आने लगे। उनमें से एक तो वर्धमान के एक दम नज़दीक आ गया और उसके कान में चिल्लाकर कुछ कहा। पर वह भाषा वर्धमान की समझ में कुछ भी न आई। उसने इशारे से बताया कि उसे बहुत भूख लगी है। तुरंत वे लोग जाकर खाने-पीने की चीज़ें ले आए। हजारों आदमी उसके मुँह पर चढ़ गए और उसके खुले हुए मुँह में खाने-पीने की चीज़ें डालने लगे।

किसी तरह पेट भरने के बाद वह फिर सो गया।

वर्धमान जिस टापू में था, उस का नाम था 'वामन-द्वीप'। वहाँ के सब लोग नाटे और बौने थे। जब वहाँ के राजा को मालूम हुआ कि उसके देश में कोई बड़ा भारी दैत्य आया है तो उसने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी— 'जाओ, उसे कैद कर ले आओ!' इस काम केलिए उसने एक गाड़ी भी भेजी जो उसके राज में सब से बड़ी थी। यह गाड़ी सात फुट लंबी और चार फुट चौड़ी थी। उस गाड़ी में बाईस पहिए लगे थे। जब वह गाड़ी वर्धमान के पास पहुँची तब वह मुर्दों से बाजी लगा कर सो रहा था। हजारों बौनों ने बड़ी मुश्किल से उसे उठाकर गाड़ी पर चढ़ा लिया। अब भी वर्द्धमान की आँखें न खुलीं। बात यह थी कि बौनों ने उसके खाने-पीने की चीजों में कोई ऐसी दवा मिला दी थी जिससे वह बेहोश पड़ा रहा।

राजा का महल वहाँ से आधे मील की दूरी पर था। वर्धमान की गाड़ी में पंद्रह सौ घोड़े जोते गए थे। एक एक घोड़ा साढ़े चार चार अंगुल का था। यह गाड़ी इस तरह साढ़े चार घंटे तक चलती रही। इतने में उसकी एक धुरी टूट गई। उसको ठीक करने के लिए गाड़ी रोक ली गई। यह मौका पाते ही वर्धमान को देखने के लिए कुछ बौने उसके मुँह पर चढ़ गए। उन में से एक ने अपनी छड़ी वर्धमान की नाक में घुसेड़ दी और उससे टटोलने लगा। बस, क्या था! वर्धमान के छींक पर छींक आने लगी। वह एक एक छींक क्या थी कि बेचारे बौनों के लिए बम का एक एक गोला ही थी। अब तो वहाँ कोलाहल मचने लगा।
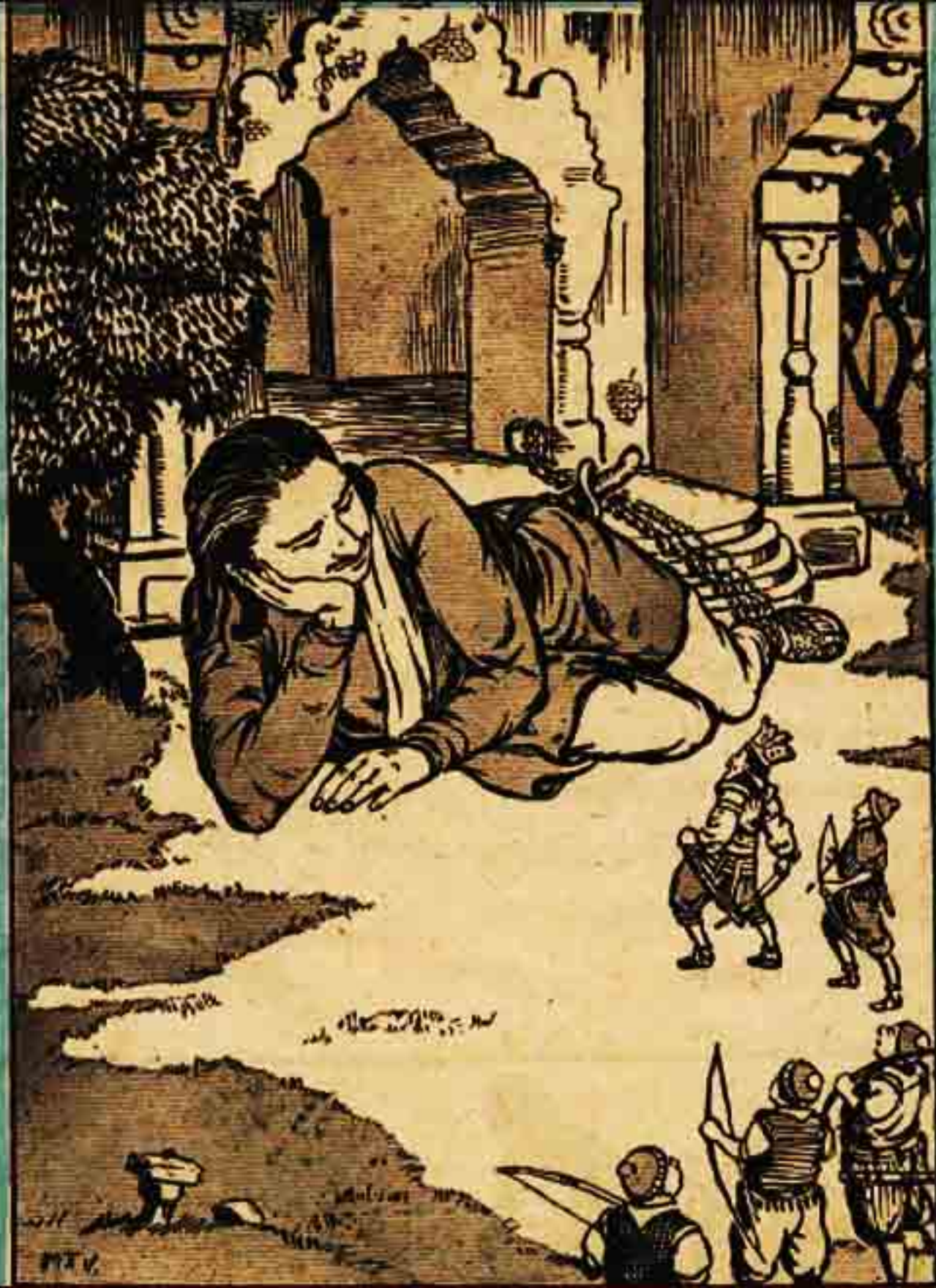
बहुत से लोग उसके मुँहपर से नीचे गिर पड़े। कितने ही लोगों को करारी चोटें आईं। आखिर धुरी ठीक हुई और खड़ खड़ करती गाड़ी फिर रवाना हुई।

कुछ देर के बाद अंधेरा हो गया। बौने मंजिल पर पहुँच कर रुक गए। पाँच सौ बौनों ने रात भर जाग कर चारों तरफ घूम-घूम कर पहरा दिया। अन-गिनत मशालें जलाई गईं। बौने सिपाही धनुष पर तीर चढ़ाए अकड़ के साथ खड़े थे। सबेरा होते ही सब लोग फिर रवाना हुए। दोपहर होते होते गाड़ी राजधानी से एक फर्लांग की दूरी पर रुक गई।

वर्धमान को देखने के लिए बौने-महाराज खुद अपने सब दरबारियों के साथ वहाँ पधारे। उन में से कुछ दरबारियों ने राजा को सावधान कर दिया कि वर्धमान के बदन पर चढ़ना अच्छा न होगा।

वहीं एक बहुत बड़ा पुराना मंदिर था। अब उस उजड़े मंदिर में पूजा-अर्चा नहीं होती थी। निश्चय हुआ कि वर्धमान को उसी में रखा जाय। क्यों कि उस शहर में वही एक ऐसी जगह थी जो उस के लिए काफी लंबी-चौड़ी थी।

राजा के लुहार आए। उन्होंने एक सौ जंजीरों से वर्धमान के हाथ-पैर जकड़ दिए। उन जंजीरों को उस मंदिर की किवाड़ों में जड़ दिया गया। फिर उस के हाथ-पैर के धागे काट दिए गए। अब लोहे की जिन जंजीरों से वर्धमान को बांधा गया था वे हमारे देश की औरतों के पैरों की सोने-चांदी की कड़ियों से ज्यादा मोटी न थीं। उन की लंबाई भी बहुत कम थी। वह ऐसा जकड़ गया था कि हिल-डुल भी नहीं सकता था।

[और भी है]

वह एक बहुत बड़े अमीर की औरत थी। उसके घर में सोना-चांदी, हीरे-जवाहर भरे पड़े थे। वह रेशम की बेश-क़ीमत साड़ियाँ पहनती थी। सुबह-शाम दोनों वक्त वह कपड़े बदलती और कोई भी साड़ी एक दफ़ा पहन लेने के बाद फिर उसे दुबारा नहीं पहनती थी। उसके बहुत-सी दासियाँ थीं। कोई काम अपने हाथों करने की ज़रूरत न थी। उसके पति भी उसे बहुत प्यार करते और जो चीज़ माँगती तुरंत ला देते। गरज़ कि दुनियाँ में उसे किसी चीज़ की कमी न थी। लेकिन नहीं; उसे एक चीज़ की बड़ी कमी थी और वह भी ऐसी चीज़, जो भगवान के सिवा और कोई नहीं दे सकता। यानी उसके कोई बाल-बच्चे न थे।

जब पास-पड़ोस की औरतों की गोद में वह बच्चों को खेलते देखती तो उसके कलेजे में एक हूक पैदा हो जाती। वह मन-ही-मन जलने लगती। उस जलन को बुझाने के लिए वह और भी सज-धज कर, और भी बन-ठन कर बाहर निकलती। अड़ोसी-पड़ोसियों के घर जा कर उन्हें अपनी बेश-क़ीमती साड़ियाँ और गहने दिखाती।

जब अड़ोस-पड़ोस के सब लोग उसकी शान-बान और ठाट-बाट देख कर दंग रह जाते तो उसको मन ही मन बड़ी खुशी होती। उसका मन हमेशा जलता रहता था। इसलिए दूसरों को जलाने में, अपने गहने कपड़े दिखा कर उन को ललचाने में उसे बड़ी खुशी होती थी।

भारत सावित्री

एक दिन वह रोज़ की तरह खूब बन ठन कर अकड़ती हुई एक ग़रीबिन के घर गई। उस घर में माटी की हँड़ियों और कुछ फटे-पुराने चीथड़ों के सिवा और कुछ नहीं था। वह ग़रीबिन उस वक्त कपड़े साफ़ करने में लगी हुई थी। इसलिए वह इस मेहमान की अच्छी आव-भगत न कर सकी। यह देख कर अमीर-औरत को बड़ा गुस्सा आया। उसने सोचा—'अरे! यह कितनी घमंडिन है! ठीक तो है, इन कंगालिनों को हम अमीरों की खातिर करना क्या मालूम! लेकिन यह किस बल पर इतनी फूली हुई है! घर में तो भूँजी भाँग नहीं है। फिर यह अकड़ कैसी!' ऐसा सोच कर उसने उस ग़रीबिन से कहा—"क्यों बहन! तुमने कभी मुझे अपने गहने-कपड़े नहीं दिखाए! अगर तुम को कोई तकलीफ़ न हो तो मुझे ज़रा दिखा दो न! लोग तो कहते हैं, तुम जैसी बड़-भागिनी कोई नहीं है।"

ग़रीबिन ने जवाब दिया—"अजी, मेरे गहने-कपड़े तो अभी बाहर गए हैं। थोड़ी देर में आ जाएँगे। ज़रा बैठ जाइए तो सब कुछ देख लीजिएगा।"

अमीर-औरत वहीं बैठ गई और मन ही मन सोचने लगी—"कैसे हैं इस औरत के गहने-कपड़े जो चलते-फिरते भी हैं! यह तो कहीं नहीं सुना कि गहने-कपड़े घूमने फिरने जाते हैं। तब तो वे बड़े निराले गहने होंगे। अच्छा थोड़ी देर में सब मालूम ही हो जाएगा।"

इतने में दो खूब-सूरत बच्चे हँसते हुए, किलकारियाँ भरते आए और दौड़ कर उस ग़रीबिन से लिपट गए और ठोड़ी पकड़

कर कहने लगे—"माँ, माँ, देखो तो आज हमें स्कूल में कैसे कैसे इनाम मिले हैं! मास्टर साहब ने कहा था—'अगर तुम क्लास में हर साल अव्वल आओगे तो हर साल तुम्हें इनाम मिलेगा।' माँ, अब हम और भी मन लगा कर पढ़ेंगे।" माँ ने उन दोनों बच्चों को गोद में लेकर चूम लिया और अपने मेहमान की तरफ़ देख कर कहा—'बहन, देखिए, यही मेरे हीरे-जवाहर और पट-पाटंवर हैं। मेरे लिए यही सब कुछ हैं। मुझ ग़रीबिन को और क्या चाहिए! आप ही बताइए, क्या ये कम सुंदर हैं!"

ये बच्चे क्या थे, मानो लाल-रतन के पुतले थे! उन्हें देख कर वह अमीर-औरत पानी-पानी हो गई। उसने दोनों हाथ जोड़ कर ग़रीबिन से कहा—"बहन! क्षमा करो। आज मेरी आंखों का परदा हट गया। लोग कहा करते थे, आप जैसी बड़-भागिनी कोई नहीं है। मैं बेवकूफ़ अपने मन में सोचती—'ज़रा जा कर तो देखूँ वह कैसी धनवान है!' आज मुझे मालूम हो गया कि आप कितनी बड़-

भागिनी हैं! मेरे पास गहने कपड़े तो हैं; लेकिन सच्चा धन तो आप के पास है। मैं अब जाती हूँ। मुझ पर आप की कृपा बनी रहे।" यह कह कर वह घर चली गई।

उस दिन से वह अमीर औरत बिल्कुल बदल गई है। अब उस में गर्व का लेश भी नहीं रह गया है। अब वह अपने हाथ से घर के सब काम-काज करती है। पड़ोसिनें भी अब उसे बहुत प्यार करती हैं। कहते हैं कुछ दिनों में वह एक बच्चे की माँ बननेवाली है। तब सचमुच ही वह अमीर हो जाएगी।

राजा के कान...

किसी समय राजनगर नाम का एक शहर था। उस शहर का राजा बड़ा धनवान था। उसके खजाने में हीरे-जवाहरात की भरमार थी। उसके पास फ़ौज भी बेशुमार थी। आस-पड़ोस के सब राजा उसकी धाक मानते थे। संसार में उसे किसी चीज़ की कमी न थी।

लेकिन न जाने क्यों, वह राजा हमेशा उदास रहा करता था। मंत्रियों ने बहुत बार उससे इस उदासी का कारण पूछा। रानियों ने भी बहुत प्रयत्न किए। पर किसी को उसकी उदासी का कारण नहीं मालूम हो सका। आखिर लोग हार कर चुप रह गए।

असल में उस राजा की उदासी का भेद यह था कि उसके कान गधे के से थे। उस का यह भेद उस राज्य में उस के नाई के सिवा और कोई नहीं जानता था। नाई को अपनी जान का डर था, इसलिए वह भेद छिपाए हुए था।

जब पहली बार नाई ने राजा की हजामत बनाई तभी राजा ने उसे चेता दिया—"अरे! देख इधर! मेरे राज में कोई यह भेद नहीं जानता। एक तू ही जानता है। इसलिए खबरदार! अगर किसी को इस की ज़रा भी भनक चली तो तेरी जान की खैर नहीं। बोटी बोटी उड़वा दूँगा। समझ गया न!"

नाई ने कहा—"जी हुजूर, खूब समझ गया। क्या मेरे बाल-बच्चे नहीं हैं! महाराज बेफ़िक्र रहें। यह भेद कोई नहीं जान सकेगा।" महाराज ने खुश हो कर उस को पांच अशर्फ़ियाँ ईनाम में दीं।

महाराज को यह वचन दे कर नाई घर आया। लेकिन उस के पेट में यह बात नहीं पच सकी। डर के मारे वह किसी से कुछ कह भी नहीं सकता था। बस, क्या था! उस का पेट फूल फूल कर कुप्पा बन गया और वह बीमार रहने लगा।

रामकुमार, नागपुर

उस को बीमार देख उसकी औरत ने एक वैद्य को बुलाया। वैद्य ने आकर नाड़ी देखी और थोड़ी देर तक सोच-विचार कर कहा— "देखो, तुम्हारे पेट में कोई भेद छिपा है। इसी से तुम्हारा पेट फूल गया है और तुम बीमार पड़ गए हो। तुम किसी से वह भेद खोल दो तो तुम्हारी बीमारी छू-मंतर हो जाय और तुम चंगे हो जाओ। अगर वह कोई बड़ा भारी भेद हो तो, तुम और किसी से न सही, कम से कम अपनी औरत से तो कह दो। तुम इतना कर लो, तो और सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा।" यह कह कर वैद्य जी अपने घर चले गए।

नाई की औरत भी वहीं खड़ी थी। वैद्य के चले जाने के बाद उसने पूछा - "अजी, वह भेद क्या है जिस के कारण तुम्हारा पेट फूल गया है! मुझे क्यों नहीं बता देते! तुम तो जानते हो मेरे पेट में बात कैसी आसानी से पच जाती है! वह भेद मुझे बता दो। मैं कसम खाती हूँ, किसी को जरा भनक भी नहीं लगने दूँगी।"

हाँ, नाई क्यों न जानता! वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी बीवी के पेट में कोई बात नहीं पचती। उसकी औरत क्या थी, एक चलती फिरती रेडियो ही थी। उस के मारे सारे शहर के नाकों दम था। उस ने कहा - "हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ, तुम बात छिपाने में कितनी होशियार हो। लेकिन मेरा यह भेद बिलकुल एक मामूली बात है। इसलिए सबसे अच्छा यही होगा कि मैं जाकर उसी वैद्य को यह भेद बता आऊँ।" यह कह कर वह वैद्य के घर चला गया। वैद्यजी घर पर ही थे। नाई को फिर आते देख कर उन्होंने पूछा - "क्यों, क्या बात है! तुम फिर यहाँ क्यों आए! मैं अभी तो तुम्हारे यहाँ से आया हूँ!"

से नहीं खोलूँगा तो मैं आप ही को बता दूँ।" वैद्य ने मुँह बिचकाते हुए कहा—"जा, जा, आया है बड़ा भेद खोलनेवाला! जाकर और किसी को ढूँढ़! मैं क्यों नाहक यह बला अपने सिर मोल लूँ!" "लेकिन वैद्य जी! आप ही बताइए कि मैं और किस को ढूँढ़ूँ? कहीं ऐसा न हो कि मैं किसी से यह भेद कह दूँ और वह जाकर सारे शहर में ढिंढोरा पीट दे। उस से अच्छा हो अगर आपही कृपा करके मेरा बोझ हल्का कर दें।" नाई ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"क्या कहूँ वैद्य जी! आप तो यह कह कर चले आए कि अपनी औरत से भेद खोल दो। उस समय मेरी औरत वहीं खड़ी थी। इसलिए मैं आप से कुछ नहीं कह सका। लेकिन अब कहता हूँ, सुनिये। मेरी औरत के पेट में छोटी सी बात भी नहीं पचती। आप उसको नहीं जानते। नहीं तो वैसी सलाह न देते। और यह तो कोई ऐसा वैसा रहस्य नहीं है। अगर कहीं यह रहस्य खुल गया तो मेरा सिर भुट्टे की तरह उड़ जाएगा। लेकिन मैंने एक अच्छा उपाय सोच लिया है। अगर आप मुझे वचन दें कि यह भेद किसी

"नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। तुम्हारा भेद सुननेवाला कोई नहीं मिलता है तो मैं क्या करूँ? कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा भेद सुनते ही मेरा पेट भी फूलने लग जाय! मैं ऐसा बुद्धू नहीं जो जान बूझ कर आग में कूद पड़ूँ! जा, जा! अगर तेरा भेद सुनने वाला कोई नहीं मिला तो जाकर किसी दीवार से पेड़ से या साँप के बिल से कह दे।" वैद्य ने चिढ़ कर जवाब दिया।

नाई ने सोचा—"वाह! यह तो खूब अच्छी सूझी। सचमुच ही जाकर किसी बांबी में अपना भेद क्यों न खोल दूँ!" यह सोच कर दौड़ता दौड़ता वह शहर के बाहर चला

गया। वहीं नज़दीक की झाड़ियों में एक बाँबी थी। नाई ने चारों ओर देखा तो आस पास आदमी क्या कोई पशु-पक्षी भी नज़र न आया। बस, उस बांबी से मुँह सटाकर उसने अपने पेटका भेद खोल दिया—"हमारे राजा के कान, गधे समान हैं।" इतना कहते ही उसकी छाती पर से मानों एक पहाड़ हट गया। वह बिल्कुल चंगा हो कर खुशी खुशी घर लौट आया।

नाई ने जिस बांबी में अपना भेद खोला था उसी के ऊपर कुछ दिन के बाद एक बांसों का झुरमुट उग आया।

उसके दो तीन महीने बाद राजा के यहाँ कोई भोज हुआ। उस भोज की चहल-पहल के लिए सब तरह के बाजे बजानेवाले बुलाए गए। उन में से एक बाँसुरी वाला भी था जिस के पास कोई अच्छी बाँसुरी न थी। उसने सोचा—'चलो शहर के बाहर जो बांसों का झुरमुट है उस में एक बांस काट कर एक नयी बांसुरी बना लूँ।' यह सोच कर संयोग से वह उसी बांबी वाले झुरमुट के पास जा पहुँचा और एक बाँस काट कर अच्छी सी बांसुरी बना ली। उस ने वह बाँसुरी राजा के दरबार में बजाने केलिए रख छोड़ी।

भोज के दिन वह बांसुरी वाला ठीक समय पर राजमहल में हाज़िर हुआ। सब बाजे वालों के बाद उसकी भी बारी आयी और उसने खुशी-खुशी बांसुरी उठाई। लेकिन यह क्या! बांसुरी से एकाएक यह क्या शब्द निकला! 'राजा के कान, गधे के समान!' सारे दरबारी चौंक पड़े और उसकी ओर अचरज़ से देखने लगे। बांसुरी वाले को काटो तो खून नहीं! उसने फिर बजाया। फिर वही सुर निकला—"राजा के कान, गधे के समान!'

राजा का मुँह गुस्से से लाल हो उठा। तल्वार खींच कर वह बांसुरी वाले की ओर झपटा कि एकही वार में उसका काम तमाम कर दें। लेकिन—

"ठहरिए, महाराज! जरा सोच-विचार लीजिए! इस में मेरा कोई दोष नहीं। यह बाँसुरी आप ही आप ऐसा बोल उठी है। विश्वास न हो तो एक बार आप ही जाँच कर लीजिए!" बांसुरी वाले ने डरते डरते कहा।

"अच्छा, मैं अभी इसकी जांच करता हूँ। अगर तेरी बात सच न निकली तो बस, जिंदा गड़वा दूँगा।" यह कह कर राजा ने बांसुरी उठाई और बजाने लगा। बांसुरी से फिर वही सुर निकला—'राजा के कान, गधे के समान!' सब लोग सन्नाटे में आ गए। राजा माथे पर हाथ रख कर बैठ गया और थोडी देर तक सोचता रहा। फिर उसने धीरे धीरे अपना मुकुट उतार कर नीचे रख दिया और कहा--

"इस बांसुरी का कहना ठीक है। मैं ही अब तक आप सब लोगों को धोखा देता आया हूँ। सचमुच मेरे कान गधे के समान हैं।"

राजा के लंबे लंबे कान देख कर सब लोग अचरज में डूब गए। उन में से कुछ लोगों ने राजा को समझा कर कहा—"अगर आप के कान गधे के समान हैं तो इस में आपका क्या दोष! जब भगवान की ऐसी मर्जी है तो आप क्या कर सकते हैं!" इस तरह उन्होंने बहुत तरह से समझाया कि गधे के से कान होने में कोई हर्ज़ नहीं है।

धीरे धीरे राजा की सारी उदासी दूर हो गई। अब वह निश्चित हो कर राज करने लगा। लेकिन जब कभी वह बाँसके उस झुरमुटके पास पहुँच जाता है तो सुनता है—

'राजा के कान, गधे के समान'

डरके मारे वह उसे कटवा भी नहीं सकता।

इस चित्र में नाचनेवाली, मृदंग बजाने वाली, बीन बजाने वाली सभी तरकारियाँ हैं। क्या तुम इन सबके नाम बता सकते हो ? जितने नाम बताओगे उतने अङ्क मिलेंगे। आखिर में जरा गिन लेना कि किसने कितने अङ्क पाए हैं ?

किसी जमाने में एक परिवार था। उस परिवार में तीन बहुएँ थीं। उन तीनों में आपस में बिलकुल बनती न थी। जब कभी उनके घर कोई नातेदार आ जाते तो उनको भोजन परोसने के लिए तीनों में होड लग जाती। तीनों झगडने लगतीं—'मैं परोसूँगी, नहीं, मैं परोसूँगी।' सास ने उनको बहुत समझाया कि 'देखो! इस तरह झगडने से गाँव-घर में हमारी बदनामी होगी'। लेकिन वे क्यों मानतीं! आखिर सास ने कहा—'बडी बहू को पत्तल डाल कर पानी छिडकना होगा। मँझली को खाना परोसना होगा। छोटी बहू को जूठे पत्तल उठा कर बाहर फेंक देना होगा।'

इस इंतज़ाम के बाद बहुओं ने झगडना छोड दिया। सास भी बहुत खुश हुई।

इस हालत में एक रोज़ उनके घर कोई मेहमान आ गए। सास ने बहुओं को बुलाकर कहा—'तुम तीनों अपना अपना काम जल्दी जल्दी कर लो। देखो, सफ़ाई का ख्याल रखना।' तीनों बहुओं ने सिर हिला कर हामी भर दी।

मेहमान हाथ-पाँव धोकर आ गए। बडी बहू ने जल्दी जल्दी उनके सामने पत्तल डाल कर पानी छिडक दिया। वे बहुत खुश हो गए। मँझली बहू ने जल्दी जल्दी पकवान वगैरह लाकर परोस दिए। मेहमान और भी खुश हो गए कि पलक मारते मारते खाना परोसा गया। इतने में तीसरी बहू आई और उसने सबसे जल्दी पत्तलें उठा कर बाहर फेंक दीं। मेहमान लोग एक दूसरे का मुँह ताकते रह गए।

सास ने मुँह बिगाड कर पूछा—'बहू! तू ने यह क्या किया!''

"ठीक तो किया है! आपने जो आज्ञा दी थी उसी के अनुसार हम में से हर एक ने अपना काम जल्दी जल्दी सफ़ाई के साथ कर दिखाया है''—तीनों बहुओं ने एक साथ जवाब दिया।

कमल कुमारी

एक जंगल में एक कौआ रहता था। उसके एक लाडली बिटिया थी। उस ज़माने में लड़के और लड़कियाँ दोनों पढ़ा करते थे। सब लोग पढ़े-लिखे होते थे। कौए ने सोचा—'जब सब लोग पढते हैं तो मेरी बिटिया क्यों न पढ़े!' यह सोचकर उसने अपनी बिटिया को खूब पढ़ाया-लिखाया।

उस ज़माने में सब लोग गाया-बजाया करते थे। जिनकी आवाज़ सुरीली होती उनकी बात छोड़ो, जिनकी आवाज़ सुरीली न होती, वे भी गाते-बजाते थे। यह देखकर कौए ने अपनी बिटिया को भी गाना-बजाना सिखवाया।

उस ज़माने में क्या सुंदर और क्या कुरूप, सभी लोग नाचना सीखते थे। इसलिए कौए ने अपनी बिटिया को नाचना भी सिखवाया। इस तरह तीनों कलाओं में कौआ-बिटिया होशियार हो गई। ठीक तो है! अपना दही किसको मीठा नहीं लगता!

हाँ, तो एक दिन कौआ-रानी को कहीं से मांस का एक टुकड़ा मिल गया। वह खुशी के साथ उसे चोंच में दबा कर एक डाल पर खाने बैठ गई। इतने में सियार-मामा ने उसे देख लिया। बच्चो, तुम सियार-मामा की चालाकी तो जानते ही हो! बस, मामा ने सोचा कि चलो, इसको चकमा देकर किसी न किसी तरह मांस का टुकड़ा उड़ा लें।

सियार धीरे-धीरे उस पेड़ के नीचे आ गया जहाँ कौआ-बिटिया बैठी थी। आते ही

केदार नाथ

वह कहने लगा—"बिटिया ! तुम तो खूब पढ़ी-लिखी हो न !"

कौआ-बिटिया तो सचमुच पढ़ी-लिखी थी ही। इसलिए वह सियार की चालाकी समझ गई। उसने बच्चों की किताब में यह पढ़ा भी था कि एक समय एक सियार ने कैसे एक कौए को चकमा दिया और उसके मुँह से रोटी का टुकड़ा उड़ा लिया था। इसलिए कौआ-बिटिया सचेत हो गई। वह समझ गई कि सियार के सवाल का जवाब देने के लिए जैसे ही वह मुँह खोलेगी, मांस का टुकड़ा नीचे गिर जाएगा और सियार उसे अपने मुँह में रख कर नौ-दो-ग्यारह हो जाएगा। कौआ-बिटिया पढ़ी-लिखी तो थी ही। इसलिए सियार के सवाल का जवाब उसने सिर्फ़ सिर हिलाकर दे दिया।

जब सियार ने देखा कि उसकी यह चाल बेकार गई तो उसने और एक चाल सोची। बड़े प्रेम से वह कहने लगा—"बिटिया ! मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छा गाती हो और मुझे गाना सुनने में बड़ा आनंद आता है। तुम ज़रा एक दो गाना गाकर सुना दो न !" अपनी बड़ाई सुनकर कौन नहीं फूल जाता ! सियार की खुशामद भरी बातें सुनकर कौआ-बिटिया भी फूल गई और गाने की तैयारी करने लगी। लेकिन थी तो वह पढ़ी-लिखी ! इसलिए उसने पहले मांस का टुकड़ा चोंच से निकाल कर चंगुल में दबा लिया और फिर गाना गाने लगी।

बेचारे सियार की आशा पर पानी फिर गया। लेकिन उसने हिम्मत न हारी। झट एक दूसरा उपाय सोचकर उसने कहा—

"वाह ! बिटिया ! कैसा अच्छा गाना गाया तू ने ! मेरी सुध-बुध भूल गई। तू ने गाना क्या गाया कि मेरे कानों में अमृत बरसाया। पर मेरी और एक प्रार्थना है। मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छा नाचती भी हो। लोग तो कहते हैं—परियाँ भी वैसा अच्छा नहीं नाच सकतीं। एक बार ज़रा नाच कर दिखा दो तो मुझे भी उसका मज़ा मिले।"

सियार की बातें सुनकर कौआ-बिटिया फूली न समाई। अब तक तो वह समझती थी कि उसका नाचना-गाना देखकर खुश होने वाला और तारीफ़ करने वाला शायद कोई है ही नहीं। आज उसे सियार जैसा पारखी मिल गया। अब उसे और क्या चाहिए था!

पर वह मांस का टुकडा! वह तो पढ़ी लिखी थी न! वह अच्छी तरह जानती थी कि खुराक के मामले में कभी बेखबर नहीं रहना चाहिए। "भूखे भजन न होइ गुपाला!"

इसलिए उसने खूब सोच-विचार कर मांस का टुकडा फिर मुँह में रख लिया और नाचने लगी। जब तक कौआ-बिटिया नाचती रही सियार को एक ही सोच था कि मांस का टुकडा कैसे उसके हाथ लगे! जब कौआ-बिटिया का नाचना ख़तम हो गया तो सियार ने बहुत सोच-विचार कर एक और चाल चली। उसने कहा—"वाह! वाह! कौआ-बिटिया! तुम कैसा अच्छा नाचती हो! तुम कैसा अच्छा गाती हो! सचमुच मेरे भाग्य अच्छे थे जो

मुझको यह सब देखने-सुनने का मौका मिला ! किन्तु मेरी एक और विनती है। अगर तुम मेरी यह इच्छा भी पूरी कर दो तो फिर मैं खुशी-खुशी घर लौट जाऊँगी। सचमुच मुझे इतनी खुशी हो रही है कि मैं भूख-प्यास भी भूल गई हूँ। अच्छा, तो कौआ-बिटिया ! मेरा जी चाहता है कि तुम्हें एक साथ गाना गाते और नाचते हुए भी देख लूँ। बोलो, क्या तुम मेरा मन रखोगी ?"

कौआ-बिटिया को सियार की तारीफ़ सुनकर इतनी खुशी हुई कि कुछ पूछना नहीं। लेकिन जब गाना और नाचना एक साथ करना होगा तो इस मांस के टुकड़े को क्या किया जाए ! उसने खूब सोच-विचार कर सियार-मामा से कहा—"मैं अभी तक नाच-गा कर बहुत थक गई हूँ। अब मैं और नाच-गा नहीं सकती। मुझे भूख भी लग रही है। अगर तुम ज़रा ठहर जाओ तो मैं यह टुकड़ा खाकर अपनी भूख मिटा लूँ। फिर तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगी।" यह सुनते ही सियार समझ गया कि यहाँ उसकी दाल न गलेगी। इसी टुकड़े के लिए तो उसने इसकी कर्कश काँव-काँव सुनी और भोंडा नाच देखा। अब टुकड़ा ही मिलने का नहीं तो वह और कष्ट क्यों उठाए ! यह सोच कर उसने कहा—"बिटिया ! अच्छा, मैं अभी आता हूँ। तुम इसी डाल पर बैठी रहो!" यह कह कर वह चलता बना।

लेकिन भला कौआ-बिटिया उसे इतनी आसानी से कैसे छोड़ सकती थी ! उसने जल्दी-जल्दी मांस का टुकड़ा निगल लिया और सियार-मामा को पुकार पुकार कर नाचना शुरू कर दिया।
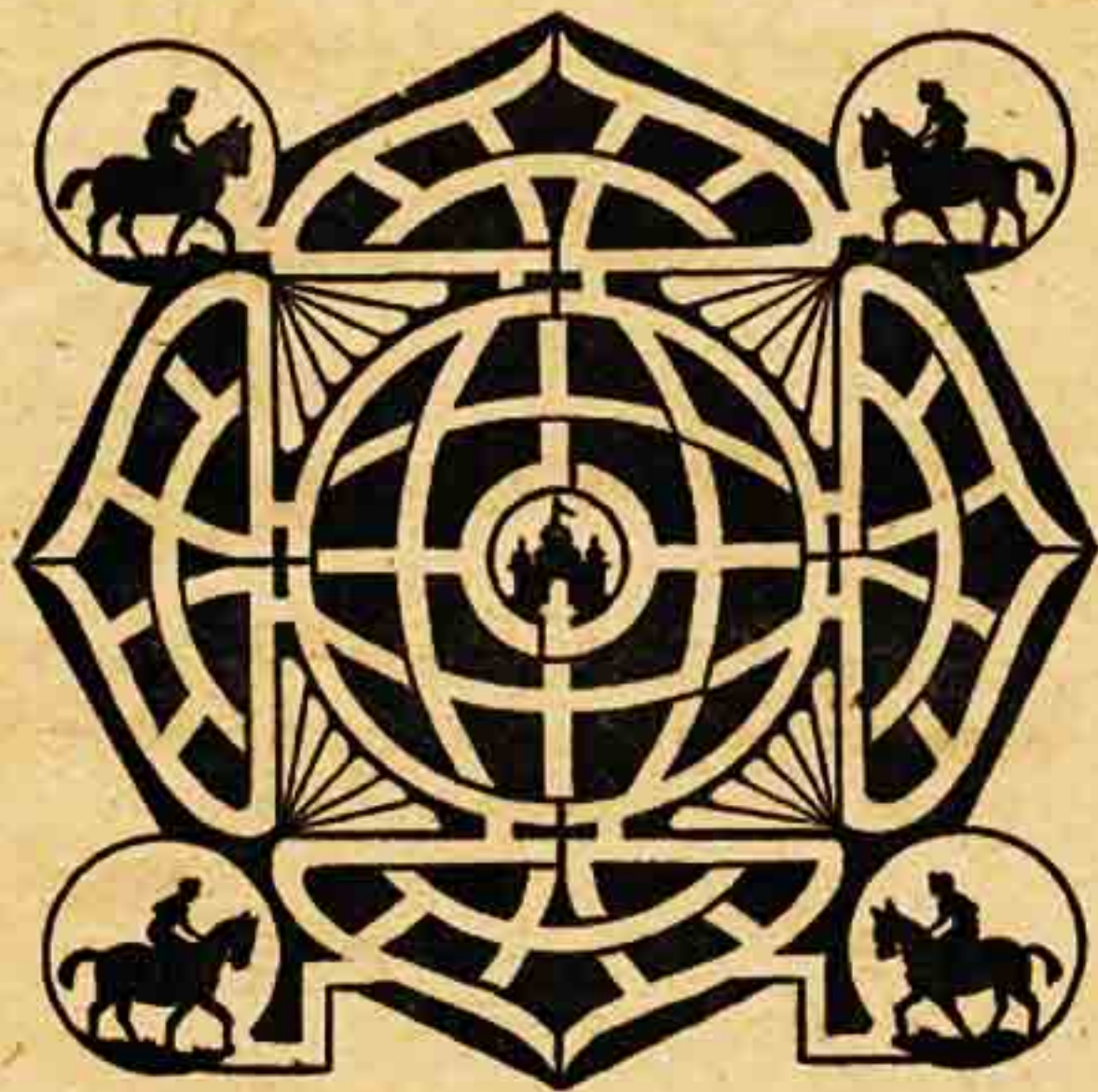
प्यारे बच्चो !

देखो, ऊपर के चित्र के बीचों-बीच एक क़िला है। चित्र के चारों कोनों में चार घुडसवार हैं। लेकिन चारों में एक ही घुडसवार उस क़िले के दरवाजे तक पहुँच सकता है। जरा बताओ तो देखें, वह भाग्यशाली घुडसवार कौन है ?

बगुले और बंदर ने आपस में बाजी लगा ली। बगुले ने कहा कि बंदर जो जो काम कर दिखाएगा सो वह भी कर दिखाएगा। पहले बंदर अपनी पूँछ लपेट कर झूलने लगा।
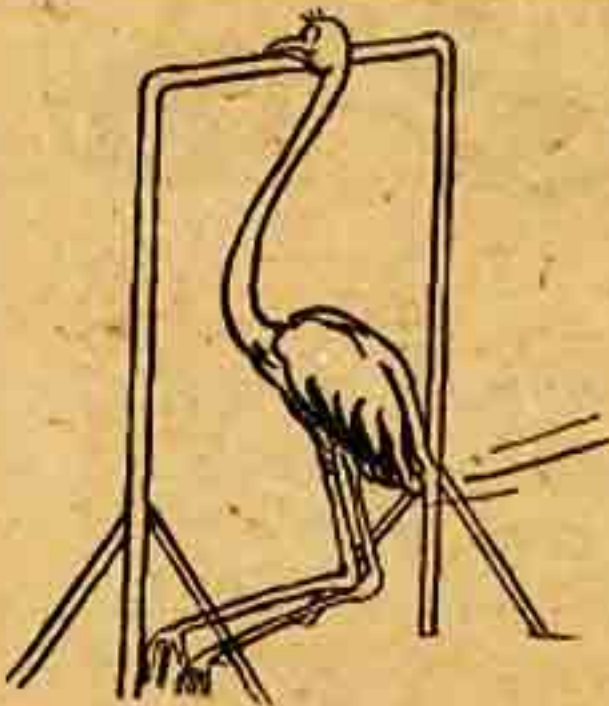
बगुले ने अपनी चोंच के सहारे वैसा ही किया।
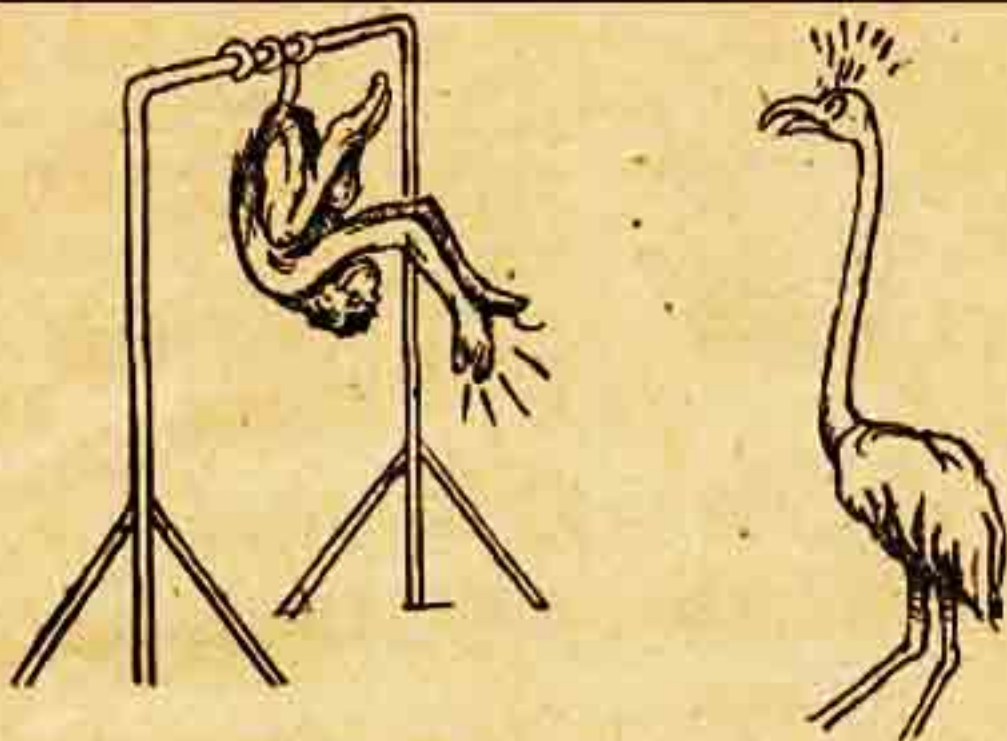
इस बार पूँछ को दुहरा तिहरा लपेट कर बन्दर बोला—
"ऐसा करो तो देखें!"
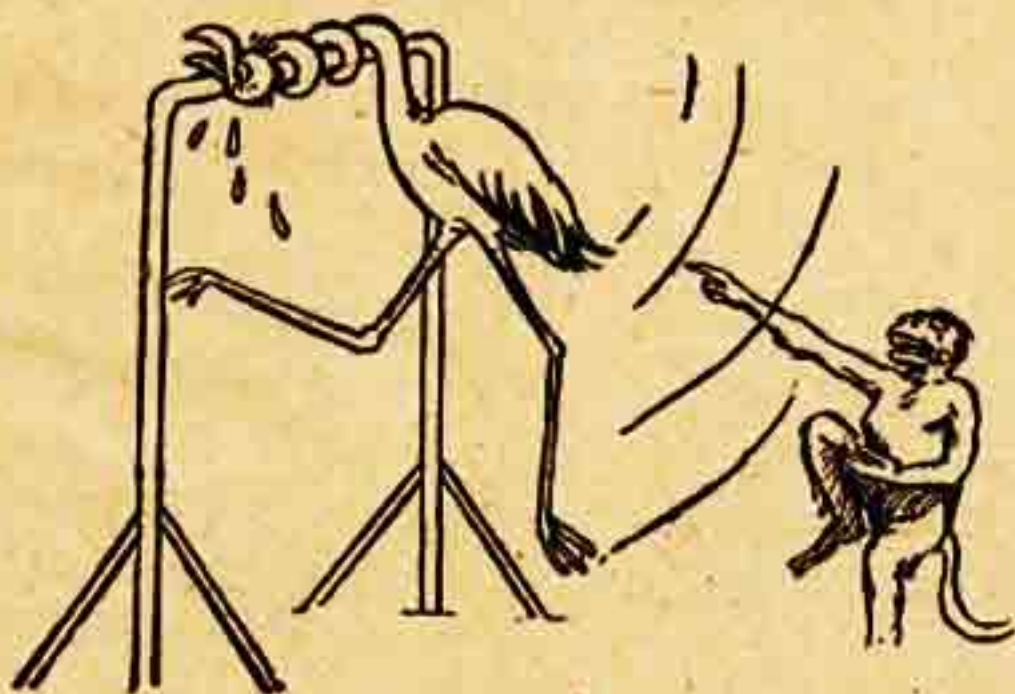
बगुले ने भी अपनी गर्दन उसी तरह लपेटी। लेकिन दर्द के मारे
वह चीखने लगा और उसकी आंखों से आंसू गिरने लगे।
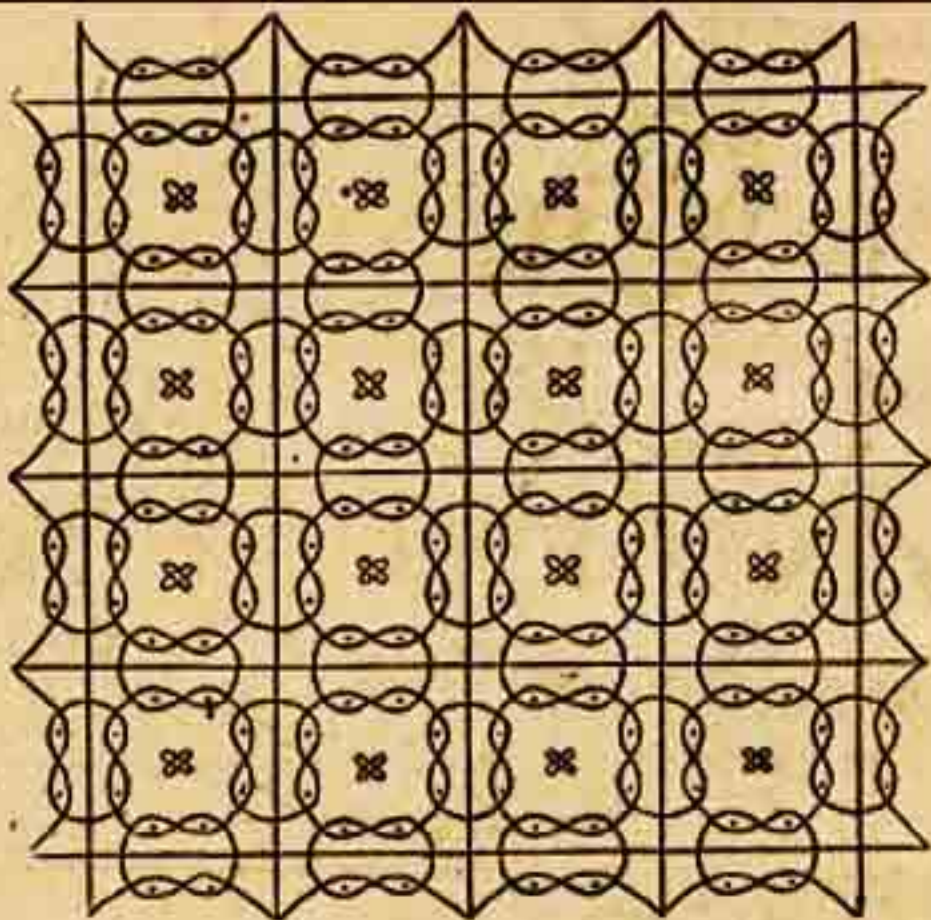
रामकुमारी
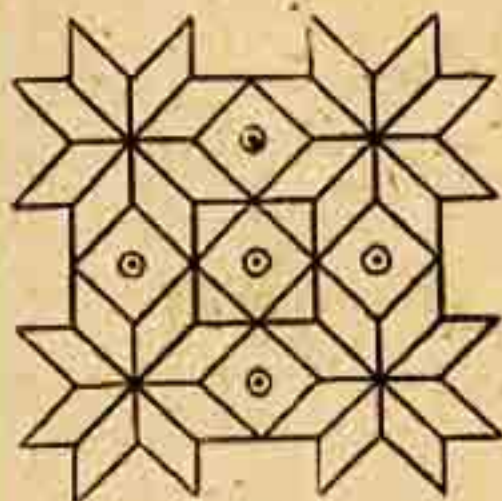
श्यामा

ललिता

भगत के बोल

एक गाँव में एक लड़का रहता था। देखने में बड़ा सुंदर, प्यारा प्यारा मुखड़ा, स्वभाव इतना अच्छा कि सारे गाँव के लोग उसे प्यार करते थे। उसके सभी हमजोली उस पर जान देते थे, उसके एक इशारे पर मर-मिटने को तैयार रहते थे। वह कभी झूठ न बोलता था, किसी के मन को दुख पहुँचाने वाली बातें न करता था। हमेशा दीन दुखियों की मदद करने की कोशिश करता। सिर्फ उसके परिवार वालों को ही नहीं, सारे गाँव को उस पर अभिमान था। उस में एक बड़ी अद्भुत शक्ति आ गई थी। उसके मुँह से जो बात निकलती, वह जरूर हो कर ही रहती। इसी से सब लोग उसे 'भगत' कहा करते थे।

एक दिन वह अपनी बहन के साथ एक अमराई में खेलने गया। गरमी के दिन थे। बाहर सारा संसार तवे की तरह तप रहा था। लेकिन आम के पेड़ के नीचे ठंडी छाँह फैली हुई थी। भगत और उसकी बहन दोनों बहुत देर तक खेलते रहे। आखिर जब थक गए तो छाँह में पीठ के बल लेट गए और ऊपर डालों की ओर देखने लगे। आम की डालों में अधपके फल लटक रहे थे। उन्हें देख कर उसकी बहन के मुँह में पानी भर आया। ललचाई आँखों से आम की ओर देखते हुए उसने कहा--'भैया! देखो तो कैसे बढ़िया आम हैं! भैया! मुझे आम तोड दो न!" बहन की बात सुन कर लड़के ने एक ढेला उठाया और एक अच्छे पके फल की ओर निशाना लगा कर फेंका। लेकिन न जाने, कैसे निशाना चूक गया और ढेला आम को न लग कर उलटे उसकी बहन को आ लगा। नन्हीं सी जीव थी। वह इस चोट से

श्री माधव शर्मा

तिलमिला गई। आँखों के आगे अंधेरा छा गया। पैरों तले से जमीन निकल गई और वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी। लड़के पर तो मानों वज्रपात हो गया! हाय! उसने यह क्या कर डाला! लेकिन सोचने के लिए समय न था। वह जानता था कि थोड़ी ही दूर पर उसी बाग के एक कोने में एक तलैया है जो सब दिन मीठे पानी से भरी रहती है। बस, वह दौड़ता हुआ जाकर चुल्लू में ठंढा पानी भर लाया और नीचे बैठकर अपनी बहन के मुँह पर पानी छिड़कने लगा। धीरे धीरे उसको थोड़ा होश आने लगा और वह आँखें खोलकर इधर-उधर देखने लगी। लड़के ने सुख की साँस ली। खैरियत थी! ढेला किसी नाजुक जगह पर नहीं लगा था। वरना जान पर आ बीतती।

अब वह लड़का इस सोच में पड़ गया कि ढेला उस की बहन को कैसे लगा! उसने तो पेड़ पर निशाना लगा कर फेंका था। ढेला वही, उसी का फेंका हुआ। बहुत देर तक सोच-विचार कर उसने तय किया कि कोई ऐसी शक्ति है जो आँखों से ओझल रहती है और यह उसी की करतूत है। यह सोच कर उसे बड़ा गुस्सा आया। वह अपने-आप बड़बड़ाया कि "वह शक्ति नाश हो जाए जिसने यह अन्याय किया है।"

इतने में उसकी बहन पूरी तरह होश में आ गई और उठ बैठी। यह देख वह बहुत खुश हुआ और बोला--'देखो, इस बार वह आम जरूर तोड़ देता हूँ।" यह कह कर उसने और एक ढेला उठाया और इस बार खूब निशाना लगाया। इस बार ढेला जाकर ठीक आम को लगा और आम डाल से

टूट कर अलग हो गया। लेकिन अजीब बात यह हुई कि न फल ही नीचे गिरा और न ढेला ही। दोनों आसमान में ऊपर ही उड़ने लगे। लड़के ने समझा, थोड़ी दूर जाकर वे जरूर नीचे गिरेंगे। इसलिए वह उनके पीछे-पीछे दौड़ता गया। लेकिन वह फल और ढेला दोनों नीचे नहीं गिरे। वे उसी तरह आसमान में उड़ते ही गए। लड़का उनके पीछे दौड़ते हुए बहुत दूर चला गया। आखिर वह फल और ढेला दोनों जादू के घोड़े की तरह उड़ते-उड़ते आसमान में गायब हो गए। वह लड़का लाचार हो कर घर लौट आया। उसकी बहन बहुत देर तक उसकी राह देख-देख कर घर चली गई थी।

जब लड़का लौट कर घर आया तो उस की माँ ने देखा कि वह बहुत ही थक गया है। उसका सारा बदन और कपड़े-लत्ते धूल से भरे हुए हैं। तब उसने झट नहाने के लिए पानी गरम कर दिया। लड़का नहाने गया और लोटा पानी में डुबा कर सर पर उंडेला। लेकिन आश्चर्य! बहुत हिलाने-डुलाने पर भी लोटे से एक बूँद भी पानी नहीं गिरा। आखिर उसे चुल्लू में ले-लेकर तेल की तरह देह में मल मल कर नहाना पड़ा।

नहाने के बाद वह तौलिया लेने गया। तौलिया दीवार पर एक खूँटी पर टँगा हुआ था। लड़के का हाथ वहाँ तक नहीं पहुंच सकता था। इसलिए वह उछला। बस, उछलना था कि वह उड़ कर एक ही दम उस पंच-मंजिले मकान की ऊपरी छत पर पहुँच गया। उसकी बहन वहीं थी। उसे यह देख कर बड़ा अचरज हुआ और वह जाकर लोगों को बुला लाई। लोग दौड़े आए और यह देख कर बड़े अचरज में पड़ गए। वे

कहने लगे-'अरे भगता! तू तो बड़ा भारी पहल-वान बन गया! पंच-मंजिले मकानों पर भी छलांग मार कर चढ़ पाता है। अब तो कुछ दिन में तू आसमान में भी उड़ने लगेगा!" इतने में उस लड़के की बहन ने उस से कहा 'भैया! भैया! कल मेरी गेंद छत पर चली गई थी। जरा खोज कर उसे नीचे फेंक दो न!" लड़के ने गेंद ढूँढ़ निकाली और नीचे फेंकते-फेंकते एक लात जमाई। अरे, यह क्या हुआ! वह सँभल न सका और एक पल में नीचे आ गिरा। इतनी ऊंचाई पर से गिरने पर तो किसी की भी हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाती; लेकिन लड़के के भाग अच्छे थे। उसे उतनी ज्यादा चोट नहीं लगी। तुरंत एक डाक्टर ने आकर जाँच की और बताया कि डरने की कोई बात नहीं है। तब सब के जी में जी आया।

डाक्टर ने इंजेक्शन देने के लिए पिचकारी निकाली तो देखता क्या है कि नली में दवा चढ़ती ही नहीं। उस ने समझा—शायद पिचकारी खराब हो गई है। इसलिए दूसरी पिचकारी निकाली। लेकिन उस में भी दवा नहीं चढ़ी। डाक्टर ने एक एक करके कई पिचकारियाँ आजमाई; लेकिन किसी से काम न चला। अब तो डाक्टर भी घबरा गया। माथे से पसीना झरने लगा। आखिर इन पिचकारियों को हो क्या गया है! लोग यह सब देख कर क्या कहेंगे? कहेंगे--इतना रुपया मिट्टी करके डाक्टरी पास कर आए हैं। लेकिन एक छोटा सा इंजेक्शन नहीं दे सकते। अब वह किसी को कैसे मुँह दिखाएगा! डाक्टर इसी उधेड़-बुन में पड़ा था कि अचानक उसका मरीज़ मुस्कुराता उठ बैठा और पूछने लगा—माँ! मुझे क्या हो गया था! ये सब लोग

हमारे घर में क्यों जमा हुए हैं !" जो लोग देखते हुए खड़े थे वे सब दांतो तले उँगली दबाने लगे। कुछ लोगों ने समझा, लड़के को हनुमानजी का इष्ट है। और कुछने समझा—उस पर भूत सवार है।

दूसरे दिन से उस लड़के के यार दोस्त भी यही जादूगरी दिखाने लगे। एक लड़का पचीस तीस गज की ऊंचाई तक उड कर धीरे धीरे नीचे उतर आया। दूसरा और भी ऊंचा उडा। तीसरा उडते उडते आसमान में गायब हो गया। एक पानी में पैदल चलने लगा तो दूसरा हवा में ही उडने लगा। एक लड़का दीवार पर चींटी की तरह रेंगने लगा तो दूसरा चमगीदड की तरह छत से लटक गया। एक सिर के बल हवा में चलने लगा तो दूसरा पीठ के बल आसमान में तैरने लगा।

छोटे-छोटे लड़कों की बात छोड दो, बड़े बूढे भी यही तमाशा करने लगे। कुछ लोग तो गौरी शंकर की चोटी पर चढ़ जाना चाहते थे। लेकिन बरफीले तूफानों के डर से हिम्मत न पडी। पहले तो यह सब अनहोनी बातें देख कर लोगों को अपनी ही आंखों पर विश्वास नहीं होता था। लेकिन थोडे ही दिनों में ये बातें पुरानी पड गईं और इनकी ओर कोई ध्यान देने वाला भी नहीं रहा।
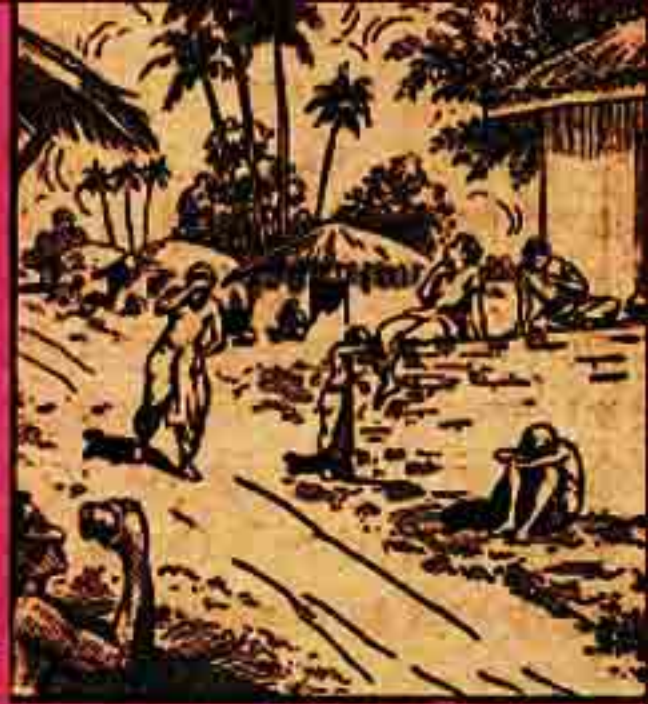
इस से और भी कई फ़ायदे हुए। लोग अब भारी-से-भारी चीजें भी आसानी से उठा लेते थे। बड़ी-से-बड़ी चट्टान भी इस तरह उठा लेते मानों वह कोई छोटा सा ढेला हो। शायद हनुमानजी ने सुमेरु-पर्वत और कन्हैया ने गोवर्धन इसी तरह उठाया था।

कुछ और भी छोटी-मोटी अद्भुत बातें देखने में आईं। खूंटियों के बगैर ही कोट टंगे रहते थे। चाय का प्याला मेज पर ही

नहीं, हवा में भी रखा रहता। कोई भी चीज़ टूट-फूट जाती तो उसके टुकड़े नीचे ज़मीन पर नहीं गिरते। जैसे-के-तैसे जुड़े रह जाते।

इस से लोगों को भारी दिक्कत भी हुई। जोर से प्यास लगने पर भी पानी गले के नीचे नहीं उतरता। नहाना भी कोई चीज़ है, यह तो लोग भूल ही गए। रोज रोज हवा में उमस बढ़ने लगी। बरसात के दिन आए और चले गए। एक बूंद भी पानी न बरसा। रेलें और मोटरें चलते चलते डुबकी खाने लगीं। दिन दिन सांस लेना भी मुश्किल होने लगा।

अब उस गांव के बड़े-बूढ़े सब मिल कर सोचने लगे कि ऐसा क्यों हो रहा है! वे गांव में हर एक आदमी से पूछ-ताछ करने लगे। कुछ लोगों ने जो भगत का प्रभाव जानते थे, उसे बुला कर पूछा—'क्यों भगत! क्या तुम जानते हो कि यह सब क्यों हो रहा है!" तब भगत ने सारा हाल उन्हें बता दिया। उस के मुंह से अचानक जो बात निकल गई वह भी उन्हें सुना दी। सारा किस्सा सुनने के बाद बड़े-बूढ़ों ने उस से प्रार्थना की—'तुम अपने बोल लौटा लो। नहीं तो दुनियाँ चौपट हो जाएगी।' तब भगत ने अपने बोल लौटा लिए।

अब बड़े-बूढ़े समझ गए कि भगत के बोल के प्रभाव से जो शक्ति नष्ट हो गई थी वह थी पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति। जब पृथ्वी ने चीजों को अपनी ओर खींचना छोड़ दिया तो थोड़ा सा धक्का लगाते ही हर चीज़ मीलों दूर चली जाने लगी। सो भी धरती पर ही नहीं, आसमान में भी। जब हवा का दबाव जाता रहा तो सांस लेना भी मुश्किल हो गया।

बच्चो! कहीं तुम भी भगत की तरह छत पर चढ़ कर नीचे न कूद पड़ना। बस, हाथ-पैर टूट जाएंगे।
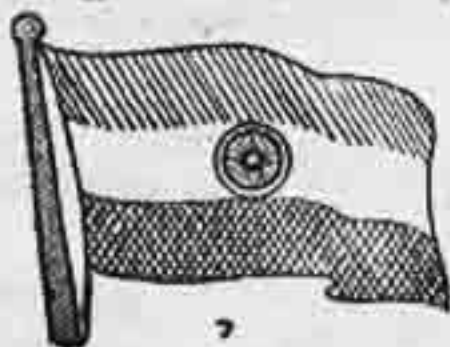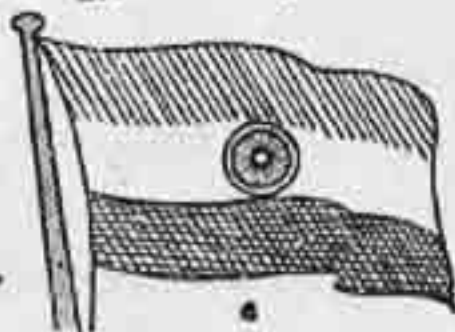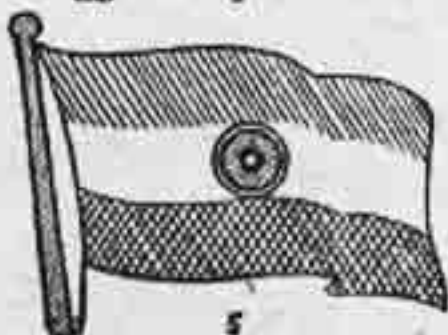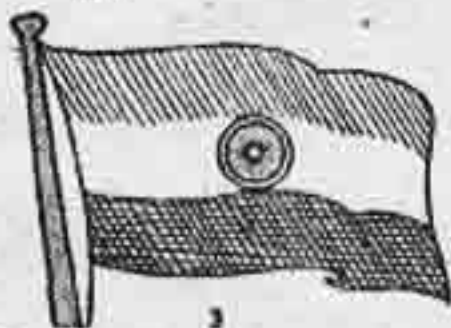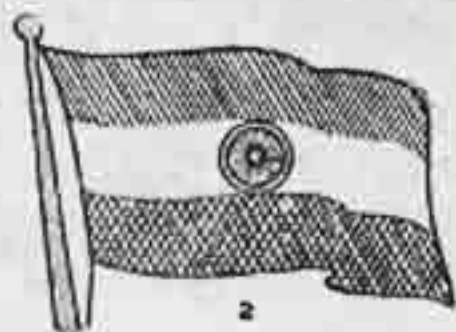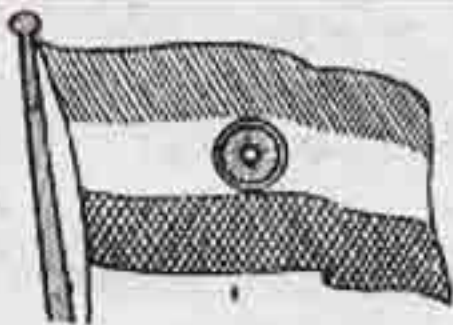
बच्चो !

ऊपर देखो—आठ झण्डे हैं। आठों देखने में एक से हैं न ? लेकिन सभी एक से नहीं हैं। आठ में सिर्फ़ दो ही एक से हैं। बाकी छहों छः तरह के हैं। अब ज़रा बताओ तो देखें कि ये दोनों जो एक से हैं, कौन कौन से हैं ? तुम न बता सको तो ५२ वें पृष्ठ में देखो; तुमको मालूम हो जाएगा।

बच्चों की देख-भाल

किसी भी माँ के लिए इससे बढ़कर खुशी की बात कुछ नहीं हो सकती कि सब लोग उसके बच्चे की बड़ाई करें। लेकिन बच्चे को इस बड़ाई के लायक बनाने के लिए बड़ों को कुछ कष्ट उठाना पड़ेगा। यह कोई मामूली बात नहीं है।

बड़ों के मुँह से जो जो बात निकलती है, उनके हाथों से जो जो काम होता है, बच्चा उन सब की नकल करता है। इसलिए बच्चों की भलाइयों और बुराइयों की जिम्मेदारी बड़ों पर है। हमें बच्चों को कभी झिड़कना नहीं चाहिए। हमेशा प्यार की निगाह से देखना चाहिए। तभी बच्चा हम से प्यार करना सीखेगा।

जरा सोचिए कि बाजार से मिठाई या खिलौना लाकर देने से बच्चा कितना खुश होता है! भेंट छोटी सी है; लेकिन बच्चे की खुशी बहुत बड़ी चीज है। लेकिन हाँ, इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि हम जो चीज़ उनको ला दें उनमें से कोई उनके तन या मन पर बुरा प्रभाव डालने वाली न हों। भेंट पाने से बच्चा उदारता सीखता है। हमें भी यह बात उसके मन में अच्छी तरह बैठा देनी चाहिए कि भेंट पाने से भी भेंट देने में अधिक आनंद मिलता है। शायद इसीलिए हमारे बड़े-बूढ़ों का कहना है कि बच्चों से मिलने के लिए जाते वक्त कभी खाली हाथों नहीं जाना चाहिए।

बच्चे के लिए दुनियाँ की हर चीज़ नई और निराली मालूम होती है। इसलिए वह हर दम अनोखे सवाल पूछता रहता है। बड़े लोग कभी-कभी ये सवाल सुनकर झुँझला जाते हैं। लेकिन कभी ऐसा नहीं करना चाहिए। सहनशीलता के साथ उनके सभी सवालों का जवाब देना चाहिए। बच्चों को कुछ सिखाने का यही सबसे अच्छा रास्ता है।

बच्चों को अच्छी तरह पालने-पोसने के लिए और बहुत सी बातों का लिहाज़ करना होगा। मैं हर महीने चन्दामामा में इस विषय पर तुमको लिखा करूँगी।

तुम्हारी दीदी

संकेत

बाएँ से दाएँ

१. हम इस पर लिखते हैं।

३. इस से मेहमानों की खातिर की जाती है।

४. सत्य।

६. एक संख्या।

८. इस से हम साँस लेते हैं।

१०. इसे उँगलियों में पहनते हैं।

११. इसे पैदा करनेवाली चीज़ों से दूर रहना चाहिये।

१३. शरीर का एक अंग विशेष।

१४. दरिया

१६. गुड़ — तो पेड़ा चीनी।

१७. मक्खी।

ऊपर से नीचे

१. इस से हम सुनते हैं।

२. यह पाने के लिए आदमी बहुत कोशिश करता है।

३. सबक।
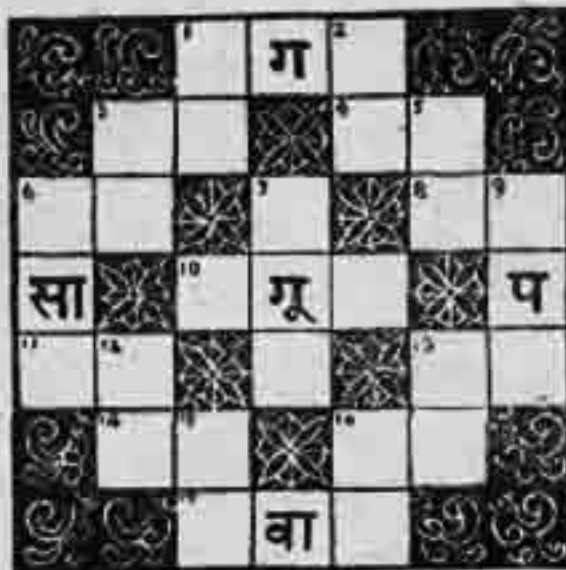
५. लोग बहुत शौक से इसकी दाल खाते हैं।

६. हिन्दी सीखना बहुत — है।

७. इसके रस से शराब बनती है।

९. छल।

१२. —शौकत से रहने से ही आदमी बड़ा नहीं बन जाता।

१३. बन्दर इस पर रहते हैं।

१५. बड़ी बहन।

१६. जिसके ये अच्छे नहीं होते उसकी कोई इज्जत नहीं करता।

■	■		ग		■	■
■			■			■
		■		■		
सा	■	10	गू		■	प
		■		■		
■			■			■
■	■		वा		■	■

बच्चो! तुम दिवाली बड़े शौक से मनाते हो। है न!—उस दिन खा-पी कर अँधेरा होते ही दिए जलाते हो, आतिशबाजियाँ जलाते हो और भी बहुत से तमाशे करते हो।

लेकिन यही आतिशबाजी के सामान बाजार में खरीदने में बहुत सा रुपया खर्च करना पड़ता है। इसलिए मैं तुमको कुछ ऐसी बातें बतलाता हूँ जिससे रुपया भी खर्च न हो और तुम दिवाली का मजा भी लूट सको। पहले फूल झड़ने के उपाय बताता हूँ।

इसके लिए मिट्टी के दिए और आल्यूमीनियम के चूरे के सिवा और कुछ नहीं चाहिए। आल्यूमीनियम का चूरा दिए पर डालते रहो; बस, सफेद सफेद चाँदी के फूल झड़ने लगेंगे। इसके बदले अगर इस्पात का चूरा डालो तो सुनहरे, सोने के फूल झड़ने लगेंगे।

थोड़ा सा धूप—जो देवताओं के आगे जलाते हैं—लाकर लपटों में डाल दो तो आग भभक उठेगी और उसमें से फूल झड़ने लगेंगे। यही क्यों! कोयले के चूरे के जलाने से भी फूल झड़ेंगे।

ये फुलझड़ियाँ देखने में अच्छी लगती हैं। लेकिन साथ साथ कुछ छटपट छटपट आवाज करने वाली चीजें चाहिए न! इसलिए सुनो, ऐसी चीज भी एक बताता हूँ। देखो, थोड़ा सा नमक—जो हम रोज इस्तेमाल करते हैं—ले लो और जलते तवे पर डाल दो। बस, छटपट की आवाज सुनते सुनते तुम्हारे कान पक जाएँगे।

मैं ने जो जो बताया है सब करके देख लेना। लेकिन होशियारी से; अग्निदेव को चिढ़ाना नहीं। नहीं तो वे गुस्सा हो जाएँगे।

पेड़ों के हिस्से

ज़मीन के इस टुकड़े में बारह पेड़ हैं। यह ज़मीन और ये पेड़ चार भाइयों के हैं जो बाँट लेना चाहते हैं। चार बराबर हिस्से बनने हैं। ज़रा भी कमी-बेशी न हो। अगर तुम इस तरह चार हिस्से न कर सको तो जवाब के लिए ५२ वाँ पृष्ठ देखो।

जवाब के लिए ५२ वाँ पृष्ठ देखो।

पहेली का उत्तर

■	■	का	ग	ज़	■	■
■	पा	न	■	स	च	■
आ	ठ	■	अं	■	ना	क
सा	■	अं	गू	ठी	■	प
न	शा	■	र	■	पे	ट
■	न	दी	■	गु	ड़	■
■	■	दी	वा	न	■	■

क्या तुम जानते हो?

हथिनी का बच्चा
कैसे दूध पीता है?

सब से तेज दौड़नेवाला जानवर कौन सा है? यह फी घंटे कितने मील की रफ़्तार से दौड़ सकता है?

*

अगर तुम जानते हो तो लिखो, नहीं तो जवाब के लिए अगला अङ्क देखो।

अंकों के तमाशे

अंकों का शिखर

$$0 \times 9 + 8 = 8$$
$$9 \times 9 + 7 = 88$$
$$98 \times 9 + 6 = 888$$
$$987 \times 9 + 5 = 8888$$
$$9876 \times 9 + 4 = 88888$$
$$98765 \times 9 + 3 = 888888$$
$$987654 \times 9 + 2 = 8888888$$
$$9876543 \times 9 + 1 = 88888888$$
$$98765432 \times 9 + 0 = 888888888$$

यह हिसाब कीजिए !

किसी आदमी के पास टोकरी भर आम थे। लेकिन वह हिसाब लगाना नहीं जानता था। सिर्फ दस तक गिन सकता था। जब किसी ने उससे पूछा कि टोकरी में कितने आम हैं तो उसने बताया,

दो फलों की ढेरियाँ लगाने पर एक फल बच रहता है।
तीन फलों की ढेरियाँ लगाने पर दो फल बच रहते हैं।
चार फलों की ढेरियाँ लगाने पर तीन फल बच रहते हैं।
पांच फलों की ढेरियाँ लगाने पर चार फल बच रहते हैं।
छः फलों की ढेरियाँ लगाने पर पाँच फल बच रहते हैं।
सात फलों की ढेरियाँ लगाने पर कुछ भी नहीं बच रहता।
आठ फलों की ढेरियाँ लगाने पर सात फल बच रहते हैं।

अच्छा अब तुम बताओ कि उसकी टोकरी में कुल कितने आम थे।

अगर न बता सको तो जवाब के लिए ५२ वाँ पृष्ठ देखो।

बच्चो ! देखो—यह एक तालाब है और उसमें एक बगुला तप कर रहा है। अब सोचो, इस तस्वीर को किन किन रंगों से रंगना चाहिए ? तुम इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले

छाया-चित्र

बच्चो ! देखो तो ये तस्वीरें कितनी निराली हैं ! इनके बनाने के लिए कागज़ और कलम की भी ज़रूरत नहीं। एक सफ़ेद दीवार और एक मिट्टी का दीया इनके बनाने के लिए काफ़ी हैं। अगर तुम अपने हाथ की उँगलियाँ तरह तरह से मोड़ते और फैलाते रहो तो दीवार पर इस तरह अनगिनत तस्वीरें बनती जाएँगी। कोशिश करो तो तुम भी ये चित्र बना सकते हो।
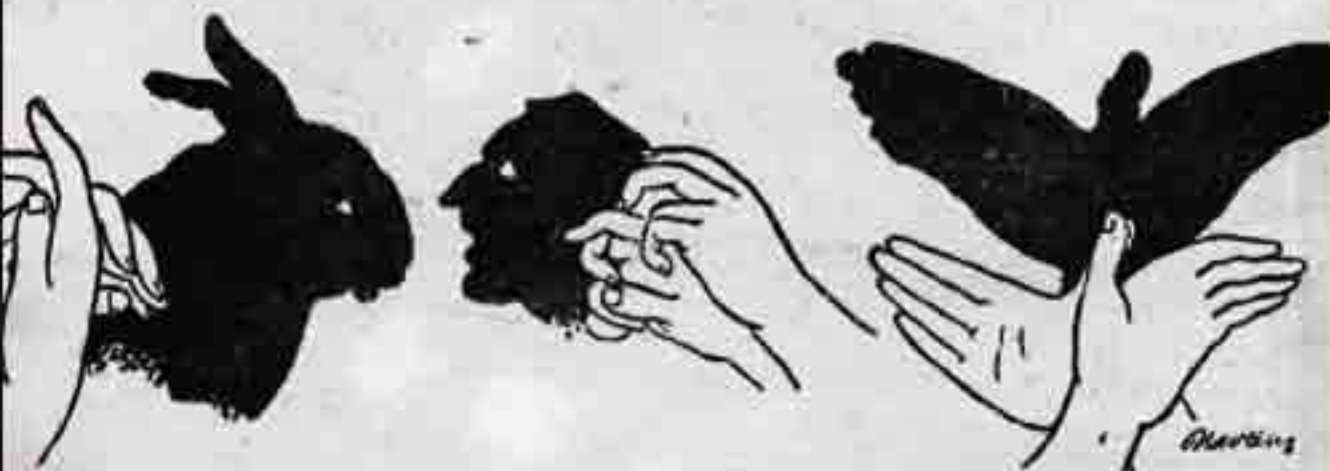
खरगोश आदमी का सिर उड़ता हुआ पंछी

पेड़ों की पहेली का जवाब

४५ वें पृष्ठ के झण्डों की पहेली का जवाब

३, ८ वें झण्डे एक से हैं

*

५० वें पृष्ठ के हिसाब का जवाब

उस टोकरी में कुल ११९ आम थे।

Controlling Editor: SRI CHAKRAPANI
Printed and Published by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press, Madras-1

Chandamama, August, '50 Photo by N. Ramakrishnan

ज़रा ठहरिए ! मैं अभी आप की बात का जवाब दूँगा ।

CHANDAMAMA (Hindi) 15th August '49 Regd. No. M. 5452

रंग - बिरंगे तोते